हिंदी 'ब'

CBSE कक्षा 10 की परीक्षा के लिए नमूना प्रश्न-पत्र

पूर्णांक : 80

समय : 3 घंटे

निर्देश
1. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं–'अ' और 'ब'।
2. खंड 'अ' में कुल 9 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों में उपप्रश्न दिए गए हैं, दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
3. खंड 'ब' में कुल 8 वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड {अ} *वस्तुपरक प्रश्न (40 अंक)*

अपठित गद्यांश

1. *नीचे दो गद्यांश दिए गए हैं। किसी गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* (1×5=5)

बाल मज़दूरी हमारे देश के लिए अक्षम्य अपराध है। देश में आज न जाने कितने बच्चे बाल मज़दूरी कर रहे हैं, क्या उन्हें हमारी तरह जीने का अधिकार नहीं है? राजेश जोशी ने बड़े ही मार्मिक तरीके से 'बाल-श्रमिक' के ऊपर करूण रस की कविता लिखी है। उनका कहना है 'बच्चे काम पर जा रहे हैं सुबह-सुबह' अर्थात् पढ़ाई-लिखाई छोड़कर बच्चे मज़दूरी करने काम पर जा रहे हैं। क्या उनके जीवन में खेल का मैदान नहीं है? क्या उनके लिए पुस्तकालय और पाठशाला नहीं हैं? इस तरह के भाव-बोध और पीड़ा-बोध से रचित राजेश जोशी की कविता आधुनिक सभ्य समाज के ऊपर एक प्रकार का व्यंग्य भी प्रस्तुत करती है।

वैश्विक स्तर पर शांति के लिए वर्ष 2014 के नोबल पुरस्कार प्राप्तकर्ता श्री कैलाश सत्यार्थी, जो 'बचपन बचाओ आंदोलन' के सृजनकर्ता माने जाते हैं, का कहना है कि "बाल-श्रमिकों की पहचान के संबंध में सबसे बड़ी समस्या उम्र का निर्धारण करना है।" उनके जागरूकता अभियान के कारण अब बहुत सीमा तक लोग जानने लगे हैं कि 14 साल के बच्चे से काम कराना एक दंडनीय अपराध है। इसमें उम्र का निर्धारण कर पाना बेहद कठिन काम है। इसमें बच्चों का शोषण करने वाले लोग उनकी उम्र-सीमा 14 वर्ष से ऊपर दिखाकर कानूनी प्रक्रिया से बंधनमुक्त हो जाया करते हैं। यदि कठोर नियम बनाकर उचित कार्यवाही की जाए, तो बाल मज़दूरी के ऊपर बहुत सीमा तक लगाम लगाई जा सकती है।

(क) निम्नलिखित में से प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

(i) नोबल पुरस्कार प्राप्त कैलाश सत्यार्थी
(ii) बालश्रम : समस्या और समाधान
(iii) पढ़ाई-लिखाई से वंचित बचपन
(iv) बालश्रम : कानूनी प्रक्रिया

(ख) राजेश जोशी की कविता का मूल आशय क्या है? (1)

(i) कवि धर्म का पालन करना
(ii) बचपन का चित्रण करना
(iii) बच्चों के प्रति तत्कालीन समाज की संवेदनहीनता को व्यक्त करना
(iv) उपरोक्त सभी

(ग) बाल श्रमिकों की पहचान के संबंध में सबसे बड़ी समस्या किसे माना गया है? (1)

(i) विद्यालयों की सीमित संख्या को
(ii) पढ़ाई के प्रति बच्चों की उदासीनता को
(iii) समाज में पढ़ाई को कम महत्त्व देने को
(iv) उम्र का निर्धारण करने को

(घ) 'बचपन बचाओ' आंदोलन का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा? (1)

(i) लोग जानने लगे कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से काम कराना एक अपराध है
(ii) लोग जान गए कि शिक्षा का क्या महत्त्व है
(iii) लोग जानने लगे कि खेल भी बच्चों के लिए आवश्यक है
(iv) लोग जानने लगे कि बचपन जीवन का सर्वोत्तम समय है

(ङ) गद्यांश के अनुसार बाल मजदूरी पर रोक कैसे लगाई जा सकती है? (1)

(i) कठोर नियम बनाकर उचित कार्यवाही द्वारा
(ii) जागरूकता अभियान द्वारा
(iii) बच्चों को काम पर न भेजकर
(iv) बाल मजदूरी को महत्त्व न देकर

उत्तर

(क) *(ii)* **बालश्रम : समस्या और समाधान** प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'बालश्रम : समस्या और समाधान' होगा, क्योंकि गद्यांश में बालश्रम की समस्या का उल्लेख करते हुए उसका समाधान प्रस्तुत किया गया है।

(ख) *(iii)* **बच्चों के प्रति तत्कालीन समाज की संवेदनहीनता को व्यक्त करना** गद्यांश के अनुसार राजेश जोशी की कविता का मूल आशय बच्चों के प्रति तत्कालीन समाज की संवेदनहीनता को व्यक्त करना है। वह कैसा समाज है, जो अपने बच्चों के लिए पुस्तकालय, खेल का मैदान, पाठशाला उपलब्ध नहीं करा पा रहा है। इन सभी समस्याओं को राजेश जोशी की कविता मुख्य रूप से उजागर करती है।

(ग) *(iv)* **उम्र का निर्धारण करने को** गद्यांश में बताया गया है कि कैलाश सत्यार्थी के अनुसार बाल-श्रमिकों की पहचान के संबंध में सबसे बड़ी समस्या उम्र का निर्धारण करना है।

(घ) *(i)* **लोग जानने लगे कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से काम कराना एक अपराध है** गद्यांश के आधार पर कह सकते हैं कि 'बचपन बचाओ आंदोलन' का समाज पर यह सकारात्मक प्रभाव पड़ा कि अधिकांश लोग इस तथ्य से अवगत हो गए कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से कम कराना एक अपराध है।

(ङ) *(i)* **कठोर नियम बनाकर उचित कार्यवाही द्वारा** गद्यांश में कहा गया है कि बाल मजदूरी पर रोक लगाने के लिए सरकार का कर्त्तव्य है कि वह इसके विरुद्ध कठोर नियम व कानून बनाए तथा जो इन नियमों की अवहेलना या उल्लंघन करे, उनके प्रति कठोर कार्यवाही की जाए।

अथवा

भारत के लिए लोकतंत्र को अपनाया जाना भारत के राष्ट्रीय आंदोलन व जनता की आकांक्षाओं का स्वाभाविक परिणाम था। लोकतंत्र के मूलभूत तत्त्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते हैं कि सब कुछ सरकार को करना चाहिए, हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से जिम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव-शक्ति अभी ख़र्राटे लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोगी बनने के बदले आज बोझ बन बैठी है, लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जाग्रत करना है। किसी भी देश को महान् बनाते हैं, उसमें रहने वाले लोग। लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी जिम्मेदारी से बचते रहे हैं। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ़-सफ़ाई की बात हो, जहाँ-तहाँ हम लोगों को गंदगी फैलाते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलाते देख सकते हैं। फिर चाहते हैं कि सब कुछ सरकार ठीक कर दे।

सरकार ने बहुत सारे कार्य किए हैं, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खोली हैं, विशाल बाँध बनवाए हैं तथा फ़ौलाद के कारखाने खोले हैं आदि बहुत सारे काम सरकार के द्वारा हुए हैं, परंतु अभी भी करोड़ों लोगों को कार्य के प्रति प्रेरित नहीं किया जा सका है। वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ-बूझ के साथ अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर खड़े हों और अपने पास जो कुछ साधन-सामग्री हो उसे लेकर कुछ कार्य करना शुरू कर दें और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गाँव वाले बड़ी-बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात जरूर समझ सकेंगे कि अपने गाँव में कहाँ कुआँ चाहिए, सिंचाई के लिए कौन-सा साधन सुलभ है और कहाँ पुल की आवश्यकता है। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते हैं।

(क) गद्यांश के आधार पर बताइए कि लोकतंत्र का मूल तत्त्व क्या है? (1)

(i) कर्त्तव्यपालन
(ii) मानव-शक्ति
(iii) आंतरिक शक्ति
(iv) ये सभी

(ख) गद्यांश के आधार पर बताइए कि किसको नींद से झकझोर कर जाग्रत करने की आवश्यकता है? (1)

(i) सरकार को
(ii) देश की विशाल मनव-शक्ति को
(iii) लोकतंत्र को
(iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) गद्यांश में सरकार द्वारा किए गए कौन-से कार्यों का उल्लेख किया गया है? (1)

(i) वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खुलवाई गई
(ii) विशाल बाँध बनवाएँ गए
(iii) कारखाने खुलवाए गए
(iv) ये सभी

(घ) गद्यांश में लेखक द्वारा राष्ट्र के नागरिकों को क्या सुझाव दिए गए हैं? (1)

(i) लोग अपनी समझ व आंतरिक ऊर्जा को आधार बनाएँ
(ii) जो भी साधन उपलब्ध हों, उनके आधार पर कार्य आरम्भ करें
(iii) (i) और (ii) दोनों
(iv) कारखाने खोलें

(ङ) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने सरकारी व्यवस्था की किस कमी को उजागर किया है? (1)

(i) सरकार द्वारा गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों को प्रेरित न करना
(ii) पंचवर्षीय योजना को
(iii) वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं को
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर

(क) (i) **कर्त्तव्यपालन** गद्यांश में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि लोकतंत्र का मूल तत्त्व कर्त्तव्यपालन है, जबकि लोग समझते हैं कि उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की जिम्मेदारी सरकार की है।

(ख) (ii) **देश की विशाल मानव-शक्ति को** गद्यांश में बताया गया है कि देश की विशाल मानव-शक्ति अभी सोई पड़ी है। अतः उसे नींद से झकझोर कर जाग्रत करने की आवश्यकता है।

(ग) (iv) **ये सभी** गद्यांश में सरकार द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों का उल्लेख किया गया है; जैसे—सरकार ने वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खुलवाईं, देश में विशाल बाँध बनवाए तथा विभिन्न कारखाने खुलवाए आदि।

(घ) (iii) (i) **और** *(ii)* **दोनों** गद्यांश में लेखक नागरिकों को यह सुझाव देता है कि लोग अपनी समझ व आंतरिक ऊर्जा को आधार बनाकर खड़े हों और उनके समक्ष जो भी साधन उपलब्ध हों उनके आधार पर ही उन्हें कार्य आरम्भ करना चाहिए।

(ङ) (i) **सरकार द्वारा गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों को प्रेरित न करना** गद्यांश में लेखक ने सरकार द्वारा गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों को प्रेरित न करने की समस्या को उजागर किया है।

2. *नीचे दो गद्यांश दिए गए हैं। किसी गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* (1×5=5)

शिक्षा किसी भी समाज की विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है, इसलिए मानव समाज में इसे उच्च प्राथमिकता दी गई है। शिक्षा से तात्पर्य है— शक्ति को ग्रहण कर मनुष्य द्वारा सही अर्थ में अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सीखना, अज्ञान के अंधकार से निकलकर ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ना। शिक्षा द्वारा ही ज्ञान और अज्ञान के मध्य अंतर को समझकर मनुष्य सही दिशा की ओर बढ़ता है तथा सम्यक् ज्ञान के प्रकाश में जीवन का सर्वांगीण विकास कर पाता है, परंतु जब समुचित विकास का मार्ग अवरुद्ध होता प्रतीत होता है, तब ऐसा समझा जाना तर्कपूर्ण है कि प्रचलित शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है।

ऐसी स्थिति में शिक्षा नीति में सुधार करना अनिवार्य हो जाता है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का अनुकरण करने के कारण हम अपनी शिक्षा और संस्कृति को भूल रहे हैं और नैतिकता के पतन की ओर अग्रसर हैं। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह मानी जाती है कि वह नीतियों से परिपूर्ण थी। नीति अर्थात् सही दिशा-निर्देश, ये मनुष्य के ऊपर उठने का, आगे बढ़ने का सबसे बड़ा माध्यम होते हैं। शिक्षा मनुष्य का सम्यक् उत्थान करती है। नीति भी मूल रूप से शिष्ट आचरण का ही दिशा-निर्देश करती है। इस प्रकार शिक्षा और नीति का मुख्य उद्देश्य एक ही है।

(क) गद्यांश के आधार पर बताइए कि समाज के विकास की प्रक्रिया का अभिन्न अंग क्या है?

(i) शिक्षा
(ii) शक्ति
(iii) क्षमता
(iv) इनमें से कोई नहीं

(ख) शिक्षा मनुष्य को किस ओर ले जाती है? (1)

(i) अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर *(ii)* ज्ञान से अज्ञान की ओर
(iii) ज्ञान से क्षमताओं की ओर *(iv)* इनमें से कोई नहीं

(ग) गद्यांश के आधार पर बताइए कि पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने मनुष्य में किसे बढ़ावा दिया है? (1)

(i) नीतियों को *(ii)* अनुकरण की आदत को
(iii) पतन को *(iv)* इनमें से कोई नहीं

(घ) प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की विशेषता क्या है? (1)

(i) अनुकरणीय *(ii)* अज्ञान की ओर ले जाने वाली
(iii) नीतियों से परिपूर्ण *(iv)* इनमें से कोई नहीं

(ङ) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किस विषय में चर्चा की है? (1)

(i) भारतीय शिक्षा पद्धति के विषय में *(ii)* पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के विषय में
(iii) *(i)* और *(ii)* दोनों *(iv)* इनमें से कोई नहीं

उत्तर

(क) *(i)* **शिक्षा** गद्यांश में बताया गया है कि शिक्षा किसी भी देश की विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। शिक्षा से व्यक्ति शक्ति को ग्रहण कर सही अर्थ में अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सीखता है।

(ख) *(i)* **अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर** शिक्षा मनुष्य को अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती है तथा सम्यक् ज्ञान के प्रकाश में जीवन का सर्वांगीण विकास कर पाती है।

(ग) *(ii)* **अनुकरण की आदत को** पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने मनुष्य में अनुकरण की आदत को बढ़ावा दिया है, जिसके कारण वह अपनी शिक्षा पद्धति व संस्कृति को दिन-प्रतिदिन भूलते जा रहे हैं। परिणाम यह हो रहा है कि भारतीय नैतिकता का निरंतर पतन हो रहा है।

(घ) *(iii)* **नीतियों से परिपूर्ण** प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह मानी जाती है कि वह नीतियों से परिपूर्ण थी। नीति अर्थात् सही दिशा-निर्देश, ये मनुष्य के ऊपर उठने का व आगे बढ़ने के सबसे बड़े माध्यम होते हैं। नीति मूल रूप से शिवर आचरण का ही दिशा-निर्देश करती है।

(ङ) *(iii)* *(i)* **और** *(ii)* **दोनों** प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने भारतीय व पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के विषय में चर्चा की है। साथ ही पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का भारतीय शिक्षा पद्धति पर पड़ने वाले प्रभाव को भी स्पष्ट किया गया है।

अथवा

'साँच बराबर तप नहीं' सूक्ति में सत्य की महत्ता को स्वीकारा गया है। सच के मार्ग पर चलना अपने आप में तप है। सच का मार्ग सदैव कँटीला होता है, कठिन होता है। तप करने की ताकत रखने वाला ही इस पर चल सकता है। तप वही कर सकता है, जिसका हृदय साफ़, निष्पाप एवं एकाग्रचित्त हो। 'सत्य' मानव हृदय के गौरव का प्रतीक है। सच बोलने वाले के मुख पर एक अलग तरह का तेज रहता है, सोच रहती है। ऐसा व्यक्ति निडर होता है, वह लोगों के दिल में स्थान बनाता है।

सत्य अटल है। लाख झूठ भी उसके समक्ष टिक नहीं सकते। झूठ बुलबुले की भाँति है, जिसका अस्तित्व क्षणिक है। सच स्थायी है, चिरंतन है। एक झूठ को छुपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं और अंत में सौ झूठों का आवरण भेदकर सत्य बाहर निकल ही आता है। सत्य से व्यक्ति जितना मुँह मोड़ता है, वह उतना पल-पल में सामने आता है।

(क) गद्यांश के आधार पर बताइए कि सत्य का अनुगमन करना किस प्रकार के मार्ग को दिखाता है? (1)

(i) काँटों से भरे मार्ग को *(ii)* तप के मार्ग को
(iii) कँटीले मार्ग को *(iv)* इनमें से कोई नहीं

(ख) 'सत्य' किसका प्रतीक है? (1)

(i) स्वयं का *(ii)* ताकत का
(iii) मानव हृदय के गौरव का *(iv)* ये सभी

(ग) गद्यांश के आधार पर बताइए कि सच बोलने वाले की क्या पहचान है? (1)

(i) मुख पर तेज होता है *(ii)* सदैव निडर रहता है
(iii) हृदय साफ होता है *(iv)* ये सभी

(घ) 'सत्य अटल है' इसका अर्थ है (1)

(i) सत्य अस्थायी होता है *(ii)* सत्य को कभी टाला नहीं जा सकता
(iii) सत्य क्षणिक होता है *(iv)* इनमें से कोई नहीं

(1)

(ङ) 'साँच बराबर तप नहीं' सूक्ति में किसके महत्त्व को दर्शाया गया है?

(i) झूठ के महत्त्व को
(ii) सत्य के महत्त्व को
(iii) क्षणिक अस्तित्व को
(iv) इनमें से कोई नहीं

उत्तर

(क) (i) **काँटों से भरे मार्ग को** गद्यांश में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि सत्य का अनुगमन करना काँटों से भरे मार्ग को दिखाता है अर्थात् सच के सामने अनेक मुश्किलें आती हैं, किंतु विजय सदैव सत्य की होती है। इसलिए कहा गया है कि सत्य का मार्ग काँटों से भरा होता है।

(ख) (iii) **मानव हृदय के गौरव का** गद्यांश में बताया है कि 'सत्य' मानव हृदय के गौरव का प्रतीक है, क्योंकि सत्यवादी कभी भी किसी के सामने नहीं झुकता उसका जीवन सदैव सम्मानपूर्वक व्यतीत होता है।

(ग) (iv) **ये सभी** गद्यांश में बताया गया है कि सच बोलने वाले व्यक्ति के मुख पर तेज होता है, सच बोलने वाला व्यक्ति सदैव निडर रहता है तथा उसका हृदय साफ होता है।

(घ) (ii) **सत्य को कभी टाला नहीं जा सकता** सत्य अटल है, इसका अर्थ है कि सत्य को कभी टाला नहीं जा सकता है। यह कुछ समय के लिए छिप सकता है, परंतु अंत में यह स्वयं को प्रकट अवश्य करता है।

(ङ) (ii) **सत्य के महत्त्व को** 'साँच बराबर तप नहीं' सूक्ति में सत्य के महत्त्व को दर्शाया गया है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि सत्य के समान कोई तप नहीं होता है।

व्यावहारिक व्याकरण

3. *निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के उत्तर दीजिए।* (1×4 = 4)

(क) काला कुत्ता मर गया-रेखांकित में पद है (1)

(i) संज्ञा पद
(ii) सर्वनाम पद
(iii) विशेषण पद
(iv) क्रिया पद

(ख) 'चाय में कुछ पड़ा है'-वाक्य में सर्वनाम पदबंध है (1)

(i) चाय
(ii) कुछ
(iii) में
(iv) पड़ा है

(ग) मोहित कल दिल्ली जाएगा-रेखांकित में पदबंध है (1)

(i) विशेषण पदबंध
(ii) क्रिया पदबंध
(iii) सर्वनाम पदबंध
(iv) संज्ञा पदबंध

(घ) साधुओं की संगति से बुद्धि सुधरती है-वाक्य में रेखांकित पदबंध है (1)

(i) संज्ञा पदबंध
(ii) सर्वनाम पदबंध
(iii) क्रिया विशेषण पदबंध
(iv) विशेषण पदबंध

(ङ) मेरी छोटी बेटी अमेरिका जा रही है-रेखांकित में कौन-सा पदबंध है? (1)

(i) सर्वनाम पदबंध
(ii) संज्ञा पदबंध
(iii) क्रिया पदबंध
(iv) विशेषण पदबंध

उत्तर

(क) (iii) विशेषण पद *(ख) (ii)* कुछ *(ग) (ii)* क्रिया पदबंध *(घ) (i)* संज्ञा पदबंध
(ङ) (ii) संज्ञा पदबंध

4. *निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के उत्तर दीजिए।* (1×4 = 4)

(क) मजिस्ट्रेट बनने पर भी उसका व्यवहार पूर्ववत् है, का मिश्र वाक्य बनेगा (1)

(i) वह मजिस्ट्रेट बना और उसका व्यवहार पूर्ववत् रहा
(ii) यद्यपि वह मजिस्ट्रेट बन गया, तथापि उसका व्यवहार पूर्ववत् है
(iii) वह मजिस्ट्रेट बना, इसलिए उसका व्यवहार पूर्ववत् है
(iv) उसका व्यवहार पूर्ववत् है, क्योंकि वह मजिस्ट्रेट बन गया

(ख) सुजाता सब्जी खरीदने बाजार गई, का संयुक्त वाक्य बनेगा (1)

(i) जब सुजाता बाजार गई तब उसने सब्जी खरीदी
(ii) बाजार जाते ही सुजाता ने सब्जी खरीदी
(iii) सुजाता बाजार गई, क्योंकि उसे सब्जी खरीदनी थी
(iv) सुजाता बाजार गई तथा सब्जी खरीदी

(ग) घंटी बजी और छात्र कक्षा से निकलकर घर चले गए। वाक्य-रचना की दृष्टि से है (1)

(i) सरल वाक्य (ii) संयुक्त वाक्य
(iii) मिश्र वाक्य (iv) सामान्य वाक्य

(घ) निम्नलिखित में मिश्र वाक्य है (1)

(i) यह वही भारत देश है, जो सोने की चिड़िया कहलाता था
(ii) सोने की चिड़िया भारत कहलाता था, क्योंकि वह एक देश है
(iii) भारत एक देश है और सोने की चिड़िया कहलाता है
(iv) जैसे ही भारत देश बना वैसे ही वह सोने की चिड़िया कहलाने लगा

(ङ) निम्नलिखित में संयुक्त वाक्य है (1)

(i) वह अपराधी था और उसे सजा मिली (ii) वह अपराधी था, इसलिए उसे सजा मिली
(iii) प्रत्येक अपराधी को सजा मिलती है (iv) जैसे ही वह अपराधी बना वैसे ही उसे सजा मिली

उत्तर

(क) (ii) यद्यपि वह मजिस्ट्रेट बन गया, तथापि उसका व्यवहार पूर्ववत् है
(ख) (iii) सुजाता बाजार गई, क्योंकि उसे सब्जी खरीदनी थी
(ग) (ii) संयुक्त वाक्य
(घ) (i) यह वही भारत देश है, जो सोने की चिड़िया कहलाता था
(ङ) (ii) वह अपराधी था, इसलिए उसे सजा मिली

5. निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के उत्तर दीजिए। (1 × 4 = 4)

(क) 'पीताम्बर' समस्त पद का विग्रह होगा (1)

(i) पीला अम्बर (ii) पीला है जो अम्बर
(iii) पीला और अम्बर (iv) अम्बर के लिए पीला

(ख) 'परलोक गमन' शब्द में कौन-सा समास है? (1)

(i) द्वंद्व समास (ii) बहुव्रीहि समास
(iii) कर्मधारय समास (iv) तत्पुरुष समास

(ग) 'भुखमरा' शब्द के सही समास-विग्रह का चयन कीजिए। (1)

(i) भूख से मरा–तत्पुरुष समास (ii) भूख के लिए मरा–तत्पुरुष समास
(iii) भूखा मरा–तत्पुरुष समास (iv) भूख ने मारा–तत्पुरुष समास

(घ) किस समास में दोनों पद प्रधान न होकर अन्य पद प्रधान होता है? (1)

(i) अव्ययीभाव समास (ii) बहुव्रीहि समास
(iii) द्विगु समास (iv) कर्मधारय समास

(ङ) 'धर्म और अधर्म' का समस्त पद है– (1)

(i) धर्म-अधर्म (ii) धर्माधर्म
(iii) धर्माधं (iv) धमआधर्म

उत्तर

(क) (ii) पीला है जो अम्बर (ख) (iv) तत्पुरुष समास (ग) (i) भूख से मरा-तत्पुरुष समास
(घ) (ii) बहुव्रीहि समास (ङ) (ii) धर्माधर्म

6. निम्नलिखित चार भागों के उत्तर दीजिए। (1 × 4 = 4)

(क) किताबों की दुकान में शृंगार सामग्री मिली ····· मुहावरे में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए। (1)

(i) ईंट का जवाब पत्थर से देना (ii) आधा तीतर आधा बटेर
(iii) ओखली में सिर देना (iv) उल्टी खोपड़ी होना

(ख) मेहमान के स्वागत में सीमा को ····· अच्छा लगता है। रिक्त स्थान की पूर्ति उचित मुहावरे द्वारा कीजिए। (1)

(i) आँखें तरेरना *(ii)* आँखें फेरना
(iii) आँखें बिछाना *(iv)* आँखें निकालना

(ग) अध्यापक द्वारा विकास को डाँटने पर विकास का ····· अच्छा नहीं लगा। रिक्त स्थान की पूर्ति उचित मुहावरे से कीजिए। (1)

(i) मुँह बनाना *(ii)* उल्लू बनाना
(iii) रास्ता बनाना *(iv)* मुँह पकड़ना

(घ) पढ़े-लिखे समाज में भी बहुत से ····· हैं। रिक्त स्थान की पूर्ति सटीक मुहावरे से कीजिए। (1)

(i) सेमल का फूल *(ii)* म्याँउ के ठौर
(iii) भाड़े के टट्टू *(iv)* लकीर के फकीर

उत्तर

(क) (ii) आधा तीतर आधा बटेर *(ख) (iii)* आँखें बिछाना *(ग) (i)* मुँह बनाना *(घ) (iv)* लकीर के फकीर

7. *निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए।* (1× 4 = 4)

हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

(क) "द्रौपदी री लाज राखी, आप बढायो चीर" पंक्ति का क्या आशय है? (1)

(i) द्रौपदी के चीर हरण के समय उसकी लाज रखने के लिए आपने (श्री कृष्ण ने) उसके चीर (साड़ी) को बढ़ाया
(ii) द्रौपदी के वस्त्र को बढ़ाकर आपने उसकी रक्षा की
(iii) हरि का यहाँ साड़ी (चीर) से कोई सम्बन्ध नहीं है
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ख) प्रस्तुत पद में किसे संबोधित किया गया है? (1)

(i) भगवान नरसिंह को *(ii)* भक्त प्रह्लाद को
(iii) आराध्य देव श्रीकृष्ण को *(iv)* श्रीकृष्ण के भक्तों को

(ग) 'भगत कारण रूप नरहरि, धरयो आप सरीर' पंक्ति के माध्यम से कवियत्री क्या कहना चाहती है? (1)

(i) भक्त की रक्षा के लिए आपने (श्री कृष्ण ने) भगवान नरसिंह का रूप धारण किया
(ii) नरसिंह का रूप भक्त की सेवा के लिए धारण करना पड़ा
(iii) भक्त के लिए आपको नरसिंह बनना पड़ा
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(घ) मीरा ने कृष्ण से स्वयं के दुःख हरने का आग्रह क्यों किया है? (1)

(i) क्योंकि वह कृष्ण की अनन्य भक्त है *(ii)* क्योंकि वह कृष्ण पर सब कुछ न्योछावर करने को तत्पर है
(iii) क्योंकि कृष्ण अपने भक्तों का कल्याण करते हैं *(iv)* ये सभी

उत्तर

(क) (i) **द्रौपदी के चीर हरण के समय उसकी लाज रखने के लिए आपने (श्री कृष्ण ने) उसके चीर (साड़ी) को बढ़ाया** द्रौपदी के चीर हरण के समय आपने (श्री कृष्ण ने) चीर (द्रौपदी की साड़ी) को बढ़ाकर उसको अपमानित होने से बचाया और उसके मान-सम्मान की रक्षा की।

(ख) (iii) **आराध्य देव श्रीकृष्ण को** प्रस्तुत पद में मीरा ने अपने आराध्य देव श्रीकृष्ण को संबोधित किया है। श्रीकृष्ण को संबोधित करते हुए वह कहती हैं कि हे ईश्वर! केवल आप ही अपनी इस दासी के कष्टों को दूर कर सकते हैं।

(ग) (i) **भक्त की रक्षा के लिए आपने (श्री कृष्ण ने) भगवान नरसिंह का रूप धारण किया** प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवियत्री यह कहना चाहती है कि जिस प्रकार अपने भक्त प्रह्लाद को बचाने के लिए आपने भगवान नरसिंह का रूप धारण किया था, उसी प्रकार मेरे कष्टों को भी दूर कर मुझे इस सांसारिक बंधन से मुक्त करा दीजिए।

(घ) (iv) **ये सभी** मीरा ने श्रीकृष्ण से स्वयं के दुःख हरने का आग्रह इसलिए किया है, क्योंकि वह कृष्ण की अनन्य भक्त है और कृष्ण अपने भक्तों का कल्याण करते हैं। साथ ही, वह श्री कृष्ण पर सब कुछ न्योछावर करने को तत्पर है।

8. *निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए।* (1×5 = 5)

बढ़ती हुई आबादियों ने समंदर को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है तथा बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया। अब गरमी में ज्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, जलजले, सैलाब, तूफ़ान और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम हैं। नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई (मुंबई) में देखने को मिला था और यह नमूना इतना डरावना था कि बंबई निवासी डरकर अपने-अपने पूजा-स्थल में अपने खुदाओं से प्रार्थना करने लगे थे।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ और लेखक का क्या नाम है? (1)

(i) तताँरा-वामीरो कथा-लीलाधर मंडलोई
(ii) कारतूस से-हबीब तनवीर
(iii) बड़े भाई साहब से-प्रेमचंद
(iv) अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले से-निदा फाज़ली

(ख) बढ़ती हुई आबादी का प्रकृति पर क्या प्रभाव पड़ा है? (1)

(i) पेड़ों को काटा जाना
(ii) प्रदूषण के कारण पंछियों की प्रजातियों का नष्ट होना
(iii) समुद्र के किनारे बड़ी-बड़ी इमारतें बनाकर उसके स्वरूप को सीमित करना
(iv) उपरोक्त सभी

(ग) मानव और प्रकृति के बीच असंतुलन का क्या परिणाम सामने आया है? (1)

(i) बिन मौसम बरसात का होना
(ii) नए रोगों का आगमन होना
(iii) प्राकृतिक आपदाओं का आना
(iv) ये सभी

(घ) गद्यांश के अनुसार प्रकृति के बढ़ते असंतुलन का मुख्य कारण किसे माना गया है? (1)

(i) बढ़ती हुई प्रजातियाँ को
(ii) बढ़ती जनसंख्या को
(iii) मौसम चक्र के असंतुलन को
(iv) पशु-पक्षियों के पलायन को

(ङ) नेचर की सहनशक्ति समाप्त होने पर वह किस रूप में सामने आती है? (1)

(i) कोमल एवं सौम्य रूप में
(ii) तटस्थ रूप में
(iii) रौद्र रूप में
(iv) शांत रूप में

उत्तर

(क) (iv) **अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले से** प्रस्तुत गद्यांश के पाठ का नाम अब कहाँ दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाले तथा लेखक का नाम निदा फाज़ली है।

(ख) (iv) **उपरोक्त सभी** बढ़ती हुई आबादी के कारण प्रकृति असंतुलित होती जा रही है। पेड़ों को काटा जा रहा है, प्रदूषण के करण पंछियों की प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं तथा समुद्र के किनारों पर निर्माण करके उसके स्वरूप के साथ छेड़छाड़ की जा रही है।

(ग) (iv) **ये सभी** मानव अपने स्वार्थवश प्रकृति का संतुलन बिगाड़ने में लगा हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप बिना मौसम बरसात, नए-नए रोगों का आगमन तथा प्राकृतिक आपदा जैसी समस्याएँ सामने आ रही हैं।

(घ) (ii) **बढ़ती जनसंख्या को** बढ़ती हुई जनसंख्या प्रकृति के असंतुलन का मूल कारण मानी जाती है, क्योंकि आबादी के बढ़ने से प्रकृति पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है अर्थात् उसका अधिक दोहन होता है।

(ङ) (iii) **रौद्र रूप में** नेचर की सहनशक्ति समाप्त होने पर वह रौद्र रूप धारण कर लेती है, जिससे अनेक प्राकृतिक आपदाएँ; जैसे– बाढ़, भूकंप, भू-स्खलन आदि आने लगती हैं।

9. *निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए।* (1×5 = 5)

मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था। अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती। इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में ज़रा देर के लिए मैं सोचने लगता—'क्यों न घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिंदगी खराब करूँ।' मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था, लेकिन उतनी मेहनत से मुझे तो चक्कर आ जाता था, लेकिन घंटे-दो-घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा। चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता। बिना पहले से नक्शा बनाए कोई स्कीम तैयार किए काम कैसे शुरू करूँ। टाइम-टेबिल में खेलकूद की मद बिलकुल उड़ जाती।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के लेखक और पाठ का क्या नाम है? (1)

(i) रवींद्र केलेकर-झेन की देन
(ii) हबीब तनवीर-कारतूस
(iii) प्रेमचंद-बड़े भाई साहब
(iv) लीलाधर मंडलोई-तताँरा-वामीरो कथा

(ख) लेखक द्वारा आँसू बहाने का क्या कारण था? (1)

(i) कक्षा में अनुत्तीर्ण होना
(ii) भाई का उपदेश देना
(iii) भाई द्वारा घर वापस भेजना
(iv) भाई की डाँट सुनना

(ग) भाई साहब की डाँट सुनने के बाद निराश हुआ छोटा भाई क्या सोचने लगता था? (1)

(i) पढ़ाई मन लगाकर करूँगा
(ii) घर वापस चला जाऊँ
(iii) पुन: खेल खेलने चला जाऊँ
(iv) पढ़ाई करना छोड़ दूँ

(घ) भाई साहब हर समय छोटे भाई को क्या उपदेश देते थे? (1)

(i) पढ़ाई करने का
(ii) समय व्यर्थ न करने का
(iii) खेलकूद न करने का
(iv) ये सभी

(ङ) निराशा के बादल हटने पर छोटा भाई क्या निश्चय करता था? (1)

(i) अपने बूते से बाहर का काम नहीं करना
(ii) अपना मूर्ख बना रहना मंजूर कर लेना
(iii) आगे से खूब मन लगाकर पढ़ाई करना
(iv) अपने दादा के पास चले जाना

उत्तर

(क) (iii) **प्रेमचंद-बड़े भाई साहब** प्रस्तुत गद्यांश के लेखक का नाम प्रेमचंद तथा पाठ का नाम बड़े भाई साहब है।

(ख) (iv) **भाई की डाँट सुनना** लेखक के पढ़ाई न करने व मौज-मस्ती करने के कारण जब बड़े भाई साहब उसे डाँट सुनाने लगते तो लेखक आँसू बहाने लगता था।

(ग) (ii) **घर वापस चला जाऊँ** भाई साहब की डाँट सुनने के बाद निराश छोटे भाई का मन करता था कि पढ़ाई उसके बस की बात नहीं है। डाँट खाने से तो अच्छा है कि वह घर वापस चला जाए।

(घ) (iv) **ये सभी** भाई साहब छोटे भाई को पढ़ाई में मन लगाने, समय व्यर्थ न करने तथा खेल-कूद में अधिक ध्यान न लगाने का उपदेश दिया करते थे।

(ङ) (iii) **आगे से खूब मन लगाकर पढ़ाई करना** भाई से डाँट खाने के दो-तीन घंटे बाद निराशा के बादल हटने पर छोटा भाई आगे से खूब मन लगाकर पढ़ाई करने का निश्चय करता तथा पढ़ने का टाइम-टेबिल बना डालता।

खंड {ब} *वर्णनात्मक प्रश्न (40 अंक)*

पाठ्य-पुस्तक एवं पुरक-पुस्तक

10. *निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए।* (2×2 = 4)

(क) वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से उत्तर क्यों दिया? 'तताँरा वामीरो' पाठ के आधार पर बताइए। (2)

(ख) सुमित्रानंदन पंत की कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' के आधार पर बताइए कि कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों? (2)

(ग) 'मनुष्यता' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि मनुष्य कब अहंकारी हो जाता है? (2)

उत्तर

(क) वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से उत्तर इसलिए दिया, क्योंकि वह न तो तताँरा को पहले से जानती थी और न ही तताँरा उसके अपने गाँव का था। उसके समाज में दूसरे गाँव के युवक से किसी युवती का बोलना पसंद नहीं किया जाता था।

(ख) कवि ने तालाब की समानता दर्पण के साथ दिखाई है, क्योंकि जिस प्रकार दर्पण में किसी की भी छवि साफ़ और स्वच्छ दिखाई देती है, उसी प्रकार तालाब का पानी भी इतना स्वच्छ और पारदर्शी था कि उसमें पहाड़ का प्रतिबिंब बिलकुल स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

(ग) मनुष्य धन-संपत्ति आने पर अहंकारी हो जाता है, क्योंकि वह इस तुच्छ धन-संपत्ति की प्राप्ति होने पर स्वयं को बड़ा महत्त्वपूर्ण समझने लगता है। उसे अपनी संपत्ति का अभिमान हो सकता है। वह संपत्तिविहीन लोगों को तुच्छ एवं व्यर्थ समझने लगता है। वह धन के उन्माद में इतना अहंकारी हो जाता है कि स्वयं को प्रभावशाली मानकर स्वयं पर मिथ्या गर्व महसूस करने लगता है।

11. वज़ीर अली किस तथ्य से परिचित हो गया था तथा उसके जीवन का क्या उद्देश्य था? 'कारतूस' पाठ के आधार पर लगभग 60-70 शब्दों में उत्तर दीजिए। (4)

उत्तर

वीर वज़ीर अली समय के साथ-साथ इस तथ्य से परिचित हो गया कि ब्रिटिश शासन किसी भी दृष्टि से भारत एवं भारतवासियों के लिए श्रेयस्कर व लाभप्रद नहीं है। यह धारणा स्पष्ट होते ही उसने अंग्रेज़ों को भारत की भूमि से बाहर निकालने का निश्चय किया। उसके जीवन का उद्देश्य ही अंग्रेज़ों को देश से बाहर करने का था। उसने अपने पाँच महीने के शासन में ही अवध के दरबार को ब्रिटिश प्रभाव से लगभग मुक्त कर लिया था। वह अफ़गानिस्तान के बादशाह को हिंदुस्तान के ब्रिटिश शासकों पर आक्रमण करने का निमंत्रण देता है। उसने कंपनी के वकील की भी हत्या कर दी। उसकी योजना यही थी कि वह अपनी शक्ति बढ़ाकर अंग्रेज़ों को भारत से निकाल बाहर करे। इसके लिए वह अलग-अलग राजाओं से मिलकर प्रयास कर रहा था। उसने अपनी वीरता और साहस से अंग्रेज़ों के मन में एक भय उत्पन्न कर दिया था।

12. *निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए।* (3 × 2 = 6)

(क) नौवीं कक्षा में दो बार अनुत्तीर्ण हो जाने वाले टोपी की भावनात्मक परेशानियों को देखते हुए शिक्षा व्यवस्था में किए जाने वाले आवश्यक बदलावों हेतु अपने शब्दों में कुछ सुझाव लिखिए। 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। (3)

(ख) वर्दी तथा परेड के उत्साह से लेखक को ऐसा क्यों लगता है कि वह भी एक फौजी है? 'सपनों के-से-दिन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (3)

(ग) हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे? (3)

उत्तर

(क) नौवीं कक्षा में दो बार अनुत्तीर्ण होने पर टोपी अपने परिवार एवं सहपाठियों के साथ-साथ शिक्षकों के लिए भी उपहास का पात्र बन गया था। अतः वह स्वयं को भावनात्मक रूप से असुरक्षित अनुभव करने लगा। उसकी भावनात्मक परेशानियों को देखते हुए शिक्षा व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण बदलाव के लिए छात्रों के संवेगात्मक विकास की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय में बच्चों की समस्याओं के निदान के लिए मनोवैज्ञानिक की नियुक्ति होनी चाहिए तथा विद्यार्थी का मूल्यांकन केवल परीक्षा पर आधारित न होकर, संपूर्ण व्यक्तित्व पर आधारित होना चाहिए तथा इसके साथ-साथ पढ़ाई में कमज़ोर विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाया जाना चाहिए।

(ख) स्काउट परेड में भाग लेने के लिए लेखक शान से जाता था। साफ वर्दी, पॉलिश किए बूट तथा जुराबों को पहनकर लेखक को लगता कि वह भी एक फौजी है। पी.टी. शिक्षक प्रीतमचंद द्वारा परेड कराते हुए लेफ्ट-राइट की आवाज तथा सीटी की ध्वनि पर बूटों की ठक-ठक करते अकड़कर चलते समय लेखक स्वयं को बिलकुल फौजी जवान के रूप में बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति समझता था। अतः वर्दी तथा परेड के उत्साह के कारण स्काउट परेड करते समय लेखक स्वयं को फौजी जवान समझने लगता था।

(ग) हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के इसलिए लगने लगे थे, क्योंकि उनके भाई और ठाकुरबारी के महंत दोनों ही उनसे नहीं, बल्कि उनकी ज़मीन-ज़ायदाद से प्यार करते थे। ठाकुरबारी के महंत उनकी ज़मीन को हड़पना चाहते थे और उनके भाई भी उनका आदर-सम्मान इसलिए करते थे, ताकि उन्हें अपने भाई की ज़मीन-ज़ायदाद मिल सके। जब ठाकुरबारी के महंत ने हरिहर काका का अपहरण कर लिया तब से हरिहर काका का ठाकुरबारी से विश्वास हट गया, उनका नज़रिया उनके प्रति बदल गया। हरिहर काका महंत का अब तक बहुत सम्मान करते थे, परंतु उनके द्वारा किए गए इस प्रकार के कार्य से उन्हें उनसे घृणा हो गई। हरिहर काका के भाइयों द्वारा भी एक दिन वही तरीका अपनाया गया जो ठाकुरबारी के महंत ने अपनाया। इस प्रकार दोनों के द्वारा किए गए इस प्रकार के कार्यों से हरिहर काका को घृणा हो गई और उन्होंने दोनों को एक ही श्रेणी में रखा।

लेखन

13. *निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।* (6)

1. आज की बचत कल का सुख

संकेत बिंदु

- बचत का अर्थ
- बचत का कारण
- दुःखदायक स्थितियों में बचत का महत्त्व
- वर्तमान और भविष्य को सुरक्षित करना
- उपसंहार

उत्तर

वर्तमान आय का वह हिस्सा, जो तत्काल व्यय (खर्च) नहीं किया गया और भविष्य के लिए सुरक्षित कर लिया गया है 'बचत' कहलाता है। आज के समय में पैसा कमाना जितना कठिन है, उससे कहीं अधिक कठिन है पैसे को अपने भविष्य के लिए सुरक्षित बचाकर रखना, क्योंकि अनावश्यक और बढ़ती महँगाई के अनुपात में कमाई के स्रोतों में कमी होती जा रही है, इसलिए हमारी आज की बचत ही कल हमारे भविष्य को सुखी और समृद्ध बना सकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

जीवन में अनेक बार ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब आकस्मिक दुर्घटनाएँ हो जाती हैं तथा रोग या अन्य शारीरिक पीड़ाएँ घेर लेती हैं, तब हमें पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। यदि पहले से बचत न की गई, तो विपत्ति के समय हमें दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ सकते हैं।

हमारी आज की छोटी-छोटी बचत या धन निवेश ही भविष्य में आने वाले सभी खर्चों का मुफ़्त समाधान कर देते हैं। आज की थोड़ी-सी समझदारी आने वाले भविष्य को सुखद बना सकती है। बचत करना एक अच्छी आदत है, जो हमारे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी लाभदायक सिद्ध होती है। किसी आवश्यक या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर बचाया गया धन ही हमारे काम आता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि बचत करके हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं।

2. आत्मविश्वास और घमंड

संकेत बिंदु

- अर्थ
- कारण
- परिणाम
- किसे अपनाना चाहेंगे और क्यों?
- उपसंहार

उत्तर

आत्मविश्वास का अर्थ है–मनुष्य को अपनी योग्यता व क्षमता पर पूर्ण विश्वास होना तथा घमंड का अर्थ है–मनुष्य में ज्ञानात्मक क्षमता हो या न हो, दोनों ही स्थितियों में अभिमान करना। आत्मविश्वास मनुष्य का सकारात्मक पक्ष है और घमंड नकारात्मक पक्ष। मनुष्य में आत्मविश्वास तब जाग्रत होता है, जब वह धैर्यशील, संयमी व परिश्रमी होता है। कठिन-से-कठिन परिस्थिति, कष्टों, बाधाओं को कुचलता हुआ जो मनुष्य निर्भीकतापूर्वक आगे बढ़ता है, उसमें आत्मविश्वास निरंतर बढ़ता जाता है। इसके विपरीत घमंड का आविर्भाव तब होता है, जब व्यक्ति बिना किसी मेहनत के अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर लेता है या अपने मेहनतकश कार्य के पश्चात् अपना बीता हुआ कल भूल जाता है। आत्मविश्वास से भरा मनुष्य जीवन में सदैव सफलता प्राप्त करता है और घमंडी मनुष्य क्षणिक सफलता का ही सुख पाता है और दूसरों के लिए व्यंग्य, घृणा व उपहास का पात्र बनता है।

अतः हमें आत्मविश्वास को अपनाना चाहिए, जिससे हम अपना जीवन सफल बना सकते हैं, क्योंकि आत्मविश्वास से भरा व्यक्ति ही नए-नए कार्य संपन्न करने का साहस कर सकता है। वह विश्वासपूर्वक अपना तथा समाज का भला कर सकता है।

3. जीवन मूल्यों में गिरावट

संकेत बिंदु

- जीवन मूल्यों में गिरावट और सामाजिक परिवर्तन
- जीवन मूल्यों में गिरावट के लिए उत्तरदायी तत्त्व
- जीवन मूल्यों में आई गिरावट को रोकने के उपाय
- उपसंहार

उत्तर

समय परिवर्तनशील है। परिवर्तन अपने साथ कुछ अच्छाइयाँ तथा कुछ बुराइयाँ भी लेकर आता है। सुख-समृद्धि के कारण समाज में हिंसा, चोरी, बलात्कार जैसी सामाजिक बुराइयाँ चुनौती के रूप में सामने आती हैं। जीवन मूल्यों में आई गिरावट के कारण मानवीय जीवन में तनाव, अनिद्रा, हृदय से संबंधित रोग और भय अपना स्थान बना चुके हैं तथा नैतिक पतन, दुराचार, सामाजिक असंतुलन जैसी बुराइयाँ आ गई हैं। भारतीयों ने पश्चिमी देशों का अंधानुकरण किया, जिससे पश्चिमी संस्कारों तथा संस्कृति ने अपना प्रभाव दिखाना आरंभ कर दिया। दुर्भाग्य से आज का भारतीय नेतृत्व आदर्श विहीन है। वे भारतीय भाषाओं पर बल देते हैं, किंतु लोकसभा की कार्यवाही अंग्रेज़ी में करते हैं।

जीवन मूल्यों में आई इस गिरावट को रोकने के लिए देश-प्रेम की भावना का विकास करने के उपाय किए जाएँ, जिससे विचारों में व्याप्त प्रदूषण को रोका जा सके। ऐसे व्यक्तियों को राजनीति में प्रवेश करना चाहिए, जो अपने जीवन एवं व्यवहार द्वारा समाज में आदर्श उपस्थित कर सकें। अतः शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को भी जीवन में स्थान देना चाहिए तभी हम एक आदर्श परिवार की स्थापना कर, खुशहाल और उन्नत राष्ट्र का स्वप्न साकार कर सकते हैं।

14. आसमान छूती महँगाई से सामान्य जनता त्रस्त है। बढ़ती हुई महँगाई के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए 'दैनिक जागरण' के संपादक को लगभग 80-100 शब्दों में एक पत्र लिखिए। (5)

अथवा

आपके नगर में एक विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला के संयोजक को लगभग 80-100 शब्दों में एक पत्र लिखकर बताइए कि आप भी इसमें सम्मिलित होना चाहते हैं।

उत्तर

परीक्षा भवन,
देहरादून।

दिनांक 15 मार्च, 20XX

सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण, देहरादून।

विषय बढ़ती महँगाई की समस्या के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से सरकार और समाज का ध्यान बढ़ती हुई महँगाई की समस्या की ओर दिलाते हुए इस संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ। आशा है आप जनहित में इसे प्रकाशित करने की कृपा करेंगे।

महँगाई की समस्या ने समाज के प्रत्येक वर्ग का जीना मुश्किल कर दिया है। चाहे अमीर हो या गरीब, सभी बढ़ती महँगाई से त्रस्त हैं। घर का कोई ऐसा सामान नहीं है, जो महँगाई से प्रभावित न हो। खाद्य पदार्थों से लेकर दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली प्रत्येक वस्तुओं के दाम निरंतर बढ़ते जा रहे हैं।

दवाओं पर होने वाले खर्चे शिक्षा के व्यय का तो कहना ही क्या? साधारण व्यक्ति को न जीते बनता है और न मरते। आपके समाचार-पत्र के माध्यम से सरकार से मेरी प्रार्थना है कि सुरसा के मुँह की भाँति बढ़ती जा रही इस महँगाई पर रोक लगाने के लिए उचित प्रबंध किए जाएँ तथा महँगाईखोरों को उचित दंड दिया जाए, जिससे गरीब जनता को राहत मिल सके।

धन्यवाद।

भवदीय
लक्ष्मी प्रसाद

अथवा

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।

सेवा में,
संयोजक महोदय,
मंगल विज्ञान केंद्र,
दिल्ली।

दिनांक 20 मार्च, 20XX

विषय विज्ञान कार्यशाला में सम्मिलित होने हेतु निवेदन पत्र।

माननीय महोदय,

आज के समाचार-पत्र के माध्यम से मुझे ज्ञात हुआ है कि आपके संयोजन व मार्गदर्शन में शहर में विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। मुझे विज्ञान में अत्यंत रुचि है तथा भविष्य में विज्ञान के क्षेत्र में ही उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता हूँ। इसी कारण मैं इस कार्यशाला का नियमित सदस्य बनना चाहता हूँ तथा भविष्य में भी होने वाली सभी कार्यशालाओं में सम्मिलित होना चाहता हूँ।

महोदय, आपसे विनम्र अनुरोध है कि मुझे इस विज्ञान कार्यशाला में सम्मिलित होने का अवसर देकर कृतार्थ करें, ताकि मैं विज्ञान क्षेत्र से संबंधित नए तथ्यों, उपकरणों आदि की जानकारी प्राप्त कर सकूँ। मैं इस कार्यशाला में सम्मिलित होने की सभी औपचारिकताएँ पूरी करने एवं निर्धारित शुल्क देने के लिए तैयार हूँ।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप मुझे इस कार्यशाला में सम्मिलित करके कृतार्थ करेंगे। आपके इस सहयोग व स्नेह के लिए मैं आपका अत्यंत आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद।

भवदीय
क. ख. ग.
अंबेडकर नगर, दिल्ली।

15. विद्यालय के विद्यार्थियों से रक्तदान करने की अपील करते हुए प्रधानाचार्य की ओर से एक सूचना 30-40 शब्दों में लिखिए। (5)

अथवा

आप यमुना पब्लिक स्कूल में हिंदी विभाग के सचिव हैं। आपके विद्यालय में आयोजित दोहा गायन प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों को आमंत्रित करते हुए 30-40 शब्दों में सूचना लिखिए।

उत्तर

केंद्रीय विद्यालय, पुष्प विहार, नई दिल्ली

सूचना

दिनांक 12 अप्रैल, 20XX

रक्तदान करने संबंधी अपील

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में 15 अप्रैल, 20XX को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। 10वीं कक्षा एवं उससे ऊपर की कक्षाओं के विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे अधिक-से-अधिक संख्या में स्वैच्छिक रक्तदान कर समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों को निभाएँ।

डी. के. अग्रवाल

(प्रधानाचार्य)

अथवा

यमुना पब्लिक स्कूल, सूरत

सूचना

दिनांक 26 जुलाई, 20XX

दोहा गायन प्रतियोगिता

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता.15 है कि विद्यालयी दोहा गायन प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय के सभागार में आयोजित होने जा रहा है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी अपना नाम 30 जुलाई तक हिंदी साहित्य समिति के सचिव को लिखवा दें।

श्री श्याम दुबे

(सचिव)

हिंदी साहित्य समिति

16. किसी ज्वैलर्स की ओर से लगभग 25-50 शब्दों में विज्ञापन लिखिए।

अथवा

बैंक की अधिक सुविधाओं का विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में लिखिए।

उत्तर

शुद्धता और विश्वास का दूसरा नाम

गौरी ज्वैलर्स

विशेष छूट ₹ 50,000 से अधिक की खरीद पर 5% की छूट

पेश करते हैं **सोना एक्सचेंज ऑफर**

किसी भी ज्वैलर्स से खरीदे या बनवाए गए गहनों को एक्सचेंज करें और उनके बदले पाएँ एकदम नए गहने, पुरानी ज्वैलरी को नई ज्वैलरी से एक्सचेंज कराने पर पुरानी ज्वैलरी के सोने की पूरी कीमत दी जाएगी

पता– दुकान नं. 109, दूसरा तल, चाँदनी चौक, दिल्ली। फोन नं.– 011-20535XX

अथवा

पब्लिक बैंक ऑफ इंडिया

जनसंपर्क विभाग

FA/ सुभाष पार्क मार्ग, फ्लाई ओवर के सामने, अँधेरी रोड (मुंबई) 400702

मुख्य सुविधाएँ

- आकर्षक ऑफर
- तत्काल लोन सुविधा
- कोई अतिरिक्त चार्ज नहीं
- कम-से-कम कागजी कार्यवाही

सावधि बचत योजनाओं पर आकर्षक ब्याज पाएँ

1 वर्ष हेतु– 8.5%
2 वर्ष हेतु– 9.0%
3 वर्ष हेतु– 9.5%

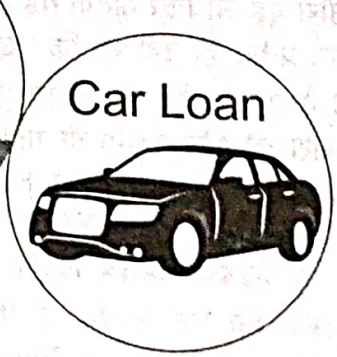

सस्ती ब्याज दर पर कार लोन, गृह लोन उपलब्ध, शीघ्र संपर्क करें।

17. "सावधानी हटी और दुर्घटना घटी" कहावत के आधार पर मौलिक कथा लिखिए। (5)

अथवा

एक मौलिक कथा लिखिए, जिसका आधार "आगे कुआँ पीछे खाई" उक्ति हो।

उत्तर

उक्ति का अर्थ "सावधानी हटी और दुर्घटना घटी" उक्ति का अर्थ है कि जब सावधानी नहीं बरती जाती, तब दुर्घटनाएँ घट जाती हैं। मनुष्य आज अपने जीवन में इतना अधिक व्यस्त हो गया है कि वह जल्द-से-जल्द अपने कार्य पूर्ण कर लेना चाहता है। देश में वाहनों की संख्या में प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। सड़कों पर ट्रैफिक (परिवहन) इतना अधिक हो गया है कि कभी-कभी 15 मिनट की दूरी के लिए 45 मिनट या उससे भी अधिक समय लग जाता है। शीघ्रता में फँसकर व्यक्ति तीव्र गति से वाहनों को चलाते हैं, जिससे दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती है, क्योंकि मनुष्य कम-से-कम समय में ज्यादा-से-ज्यादा दूरी तय कर लेना चाहता है।

अत्यधिक ट्रैफिक होने के साथ-साथ लोग लापरवाह होते जा रहे हैं। सड़क पर तीव्र गति से वाहनों को चलाते समय लोग ट्रैफिक के नियमों का पालन नहीं करते। दो पहिए वाले वाहनों को चलाते समय हैलमेट आदि का प्रयोग नहीं करते, तो दूसरी ओर कार, बस, स्कूटर आदि चलाने वाले व्यक्ति शराब पीकर वाहन चलाते हैं, यही सब खामियाँ दुर्घटना को अंजाम देती हैं।

कथा एक दिन ऐसी ही दुर्घटना सड़क के चौराहे पर हुई, जिसमें तेज रफ़्तार से चली आ रही कार की मोटर साइकिल से टक्कर हो गई। टक्कर होने से मोटर साइकिल सवार व्यक्ति सड़क के दूसरी ओर जा गिरा। साइकिल पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। कार अनियंत्रित हो जाने के कारण बिजली के खंभे से जा टकराई, जिससे कार चालक को भी बुरी तरह चोट आई। यह दुर्घटना तीव्र गति से वाहन चलाने व ट्रैफिक नियम का पालन न करने से हुई। घटनास्थल पर उपस्थित लोगों ने दोनों व्यक्तियों को पास के ही अस्पताल में पहुँचाया। घटनास्थल पर पुलिस कुछ देर पश्चात् आई। पुलिस ने उन व्यक्तियों का पूरा ब्यौरा लिखा साथ ही कुछ चश्मदीद गवाहों से पूछताछ कर रिपोर्ट तैयार की। अस्पताल में पीड़ित व्यक्तियों का इलाज करवाया गया। इस दुर्घटना ने सभी को एक सीख दी, जैसे ही सावधानी हटती है वैसे ही दुर्घटना घटित हो जाती है।

सीख हमें निजी वाहनों का प्रयोग कम-से-कम करना चाहिए। सड़क पर चलते समय मोबाइल आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दुर्घटना होने पर हमें घायल व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए, उसे जल्द-से-जल्द अस्पताल ले जाना चाहिए, ताकि उसकी जान बचाई जा सके। यह प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य और दायित्व होना चाहिए। अतः सड़क पर वाहनों को चलाते समय हमें हमेशा इस उक्ति का स्मरण रखना चाहिए– *"दुर्घटना से देर भली।"*

अथवा

उक्ति का अर्थ "आगे कुआँ पीछे खाई" अर्थात् दोनों ओर से विपत्ति का आना। इस उक्ति को बेहतर समझने के लिए एक कथा प्रस्तुत है।

कथा मेरे गाँव का एक निवासी गगन किसी कार्यवश रेलगाड़ी द्वारा भोपाल जा रहा था। वह अत्यंत बहादुर था और अनेक बार अपनी वीरता के लिए प्रशस्ति-पत्र प्राप्त कर चुका था। उसकी गाड़ी दिल्ली से रवाना हुई। रात के लगभग 10 बजे जब गाड़ी चंबल के भयावह जंगल से गुजर रही थी, यात्री इस सुनसान माहौल में थोड़ा भयभीत थे। अचानक ही कुछ डाकुओं ने हमला कर दिया और गाड़ी रुकवाकर लूटपाट करने लगे। गगन द्वारा विरोध करने पर डाकुओं ने उसे बंदूक से घायल कर दिया। तब भी गगन ने हौंसला दिखाते हुए, जान बचाने के उद्देश्य से चुपचाप गाड़ी से नीचे उतर गया। उसका एक सह यात्री चुपचाप उसके पीछे हो लिया। वे दोनों गाड़ी के नीचे पटरी पर लेट गए, अब दोनों डाकुओं के जाने का इंतजार करने लगे। सहसा ही रेलगाड़ी धीमी गति से चल पड़ी। अब उन दोनों को साक्षात् मृत्यु का आभास होने लगा था। दोनों पटरी पर लेटे रहे। अब उनकी साँस यह सोचकर अटक गई कि वे या तो रेलगाड़ी के नीचे कुचले जाएँगे अन्यथा डाकू उन्हें पकड़ लेगें। उनकी अवस्था देखकर यह कहावत साक्षात् प्रतीत हो रही थी कि "आगे कुआँ पीछे खाई।"

तभी शायद किसी के सूचना देने पर क्षेत्रीय पुलिस ने आकर डाकुओं को मार भगाया और उन दोनों को भी सकुशल बचा लिया। तत्पश्चात् रेलगाड़ी गंतव्य स्थल की ओर रवाना हो गई।

सीख इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि मुसीबत में अत्यंत सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए तथा जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।